नर्मदा घाटी के डायनासौर

डॉ. रवि उपाध्याय एवं शरद त्रिवेदी उपाध्याय

राजासौरस नर्मदेन्सिसः एक कलाकार द्वारा बनाया गया काल्पनिक चित्र

आज की नर्मदा घाटी 100 करोड़ वर्ष पूर्व गोंडवाना नामक बहुत बड़े भूभाग का अंश थी। माना जाता है कि इस भूभाग में अफ्रीका, मेडागास्कर, दक्षिण अमेरिका एवं भारत का भूभाग जुड़ा हुआ था। गोंडवाना महाद्वीप का एक टुकड़ा भारत का दक्षिण का पठार है। इसी का एक अंश नर्मदा घाटी है। आज की नर्मदा नदी के स्थान पर 50 करोड़ वर्ष पूर्व उत्तर भारत और दक्षिण भारत के मध्य समुद्र था।

भारतीय मूल के अमेरिकी वैज्ञानिक शंकर चटर्जी के मतानुसार लगभग 5 करोड़ वर्ष पूर्व एक विशाल उल्का पिंड आकर अरब सागर में गिरा जिसके कारण 500 कि.मी. का एक गड्ढा बना जिसे शिवा क्रैटर कहा जाता है। इसके कारण पृथ्वी पर काफी उथल हुई और कई ज्वालामुखी अचानक फूट पड़े। इसके कारण पृथ्वी की महाद्वीपों वाली प्लेट खिसकी और कई नए महाद्वीप बने। इस उथल-पुथल में भारत के मध्य का समुद्र समाप्त हो गया इस तरह भारत के उत्तर और दक्षिण भूखण्ड जुड़ गए और बीच में विंध्याचल और सतपुड़ा पर्वत श्रृंखलाएं बनी। इन पहाड़ियों के मध्य स्थित दर्रे में आज की नर्मदा नदी बहती है। इस नर्मदा घाटी के गर्भ में कई सौ करोड़ वर्ष पुराना इतिहास दबा हुआ है। इस इतिहास के पन्ने तब उजागर होते हैं जब नदी की धारा वर्षा के बाद अपना रास्ता बदलती है या फिर इस घाटी में कोई उत्खनन कार्य शुरू किया जाता है। इसी प्रागैतिहासिक काल के विचित्र और भीमकाय जीव हैं डायनासौर।

डायनासौर का अर्थ है दैत्याकार छिपकली। स्टीफैन स्पीलबर्ग की फिल्म दी जूरासिक पार्क ने डायनासौर को विश्व प्रसिद्ध कर दिया। डायनासौर छिपकली और मगरमच्छ कुल के जीव थे। ज्यूरासिक काल (25 करोड़ वर्ष पूर्व) से क्रेटेशियस काल (6 करोड़ वर्ष पूर्व) के बीच पृथ्वी पर इनका ही साम्राज्य था। उस काल में इनकी कई प्रजातियां पृथ्वी पर विद्यमान थीं। इनकी कुछ ऐसी प्रजातियां भी थीं जो पक्षियों के समान उड़ती थीं। ये सभी डायनासौर सरिसृप समूह के थे। इनमें कुछ छोटे (4 से 5 फीट ऊंचे) तो कुछ विशालकाय (50 से 60 फीट ऊंचे) थे। इनकी अधिकतम ऊंचाई 100 फीट तक नापी गई है। आज से लगभग 6 करोड़ वर्ष पूर्व ये पृथ्वी से अचानक विलुप्त हो गए। परन्तु भारत और चीन में ये उसके बाद तक (लगभग 50 से 60 लाख वर्ष तक) विचरण करते रहे। आज हमें इनके जीवाश्म ही प्राप्त होते हैं।

भारत में भी डायनासौर के कई जीवाश्म प्राप्त हुए हैं। इनमें नर्मदा घाटी से प्राप्त डायनासौर के जीवाश्म प्रमुख हैं। इनका इतिहास काफी पुराना है। सर्वप्रथम आर. लाइडेकर ने 1877 में जबलपुर के पास से लमेटा स्थल से डायनासौर के जीवाश्म प्राप्त किए थे। इस जीवाश्म को *टायटेनोसौर* कहा गया। इसी तरह के कई डायनासौर के जीवाश्म *जबलपुरिया, जैनासौरस, इंडोसौरस, आइसियोसौरस, लमेटोसौरस* और *राजोसौरस* वगैरह हैं।

1. *टाइटेनोसौरस* - *टाइटेनोसौरस* का अर्थ होता है दैत्याकार छिपकली। इसके कुछ हिस्सों के जीवाश्म ही

प्राप्त हुए हैं। यह लगभग 20 फीट ऊंचा और 30 फीट लम्बा था। इसके जीवाश्म क्रेटेशियस काल के हैं। इन्हें जबलपुर के पास से लाईडेकर द्वारा 1877 में खोजा गया।

2. *इंडोसौरस* - वॉन हुईन एवं मेटली ने 1933 में जबलपुर, मण्डला के कई स्थानों पर कई डायनासौरों के जीवाश्म खोजे थे। जैसे *मेगालोसौर, कारनाटोसौर, आर्थोगानियासौर* आदि। इन सभी को *थीरोपोड* जीव समूह के *इंडोसौरस* उपसमूह में रखा गया है। इनके भी अधूरे जीवाश्म ही प्राप्त हुए हैं। इनकी ऊंचाई करीब 30-35 फुट और वज़न 700 किलो रहा होगा।

3. *जबलपुरिया टेनियस* - इसके जीवाश्म 1933 में वॉन हुश्न एवं मेटली द्वारा जबलपुर के पास लमेटा स्थल से खोजे गए थे। यह छोटे कद का (लगभग 3 फुट ऊंचा, 4 फीट लम्बा) और 15 किलो वज़नी डायनासौर था।

4. *राजासौरस नर्मदेन्सिस* - अभी तक प्राप्त डायनासौर जीवाश्मों में *राजासौरस* के जीवाश्म 80 प्रतिशत तक संरक्षित किए जा सके हैं। इस डायनासौर का जीवाश्म गुजरात के खेड़ा ज़िले के रइहोली गांव से भारतीय भूगर्भ शास्त्री डॉ. श्रीवास्तव द्वारा 1982 में खोजा गया था। इसे *राजासौरस नर्मदेन्सिस* कहा गया। यानी डायनासौर का राजा। इसके सिर पर मुकुट के समान एक सींग था। यह 20-30 फुट ऊंचा, 45 फुट लंबा मांसभक्षी डायनासौर था। बालाघाट एवं धार ज़िले से भी इसके अण्डों के जीवाश्म प्राप्त हुए हैं।

हाल ही में शा. नर्मदा महाविद्यालय, होशंगाबाद के शोधकर्ताओं के एक दल ने मध्यप्रदेश में रायसेन ज़िले के पतई ग्राम के समीप सिद्धघाट के पास नर्मदा नदी के किनारे कई डायनासौरों के जीवाश्म और उनके अण्डों के जीवाश्म प्राप्त किए हैं। ये जीवाश्म शेल और बलुआ पत्थर की चट्टानों के बीच धंसे हुए हैं। यहां एक से अधिक प्रकार के डायनासौरों के जीवाश्म समूह को देखकर प्रतीत होता है कि यहां कई प्रकार के डायनासौरों का वास रहा होगा।

ये जीवाश्म अस्थियों के, पैर की हड्डियों के, पंखों के तथा अण्डों के हैं। ये सभी जीवाश्म 1.5 कि.मी. क्षेत्र में नर्मदा किनारे बिखरे पड़े हैं। एक जीवाश्म की लम्बाई 43 फीट तक नापी गई है। कई हड्डियों के जीवाश्मों की लम्बाई 4-5 फीट और चौड़ाई लगभग 6-8 इंच नापी गई है। कई चट्टानों पर पक्षियों के पंख के आकार की छाप नज़र आती है। इन्हें देख कर उड़ने वाले डायनासौर की उपस्थिति की संभावना प्रतीत होती है। यहां उनके कई घोसले और अण्डों के जीवाश्म भी मिले हैं। इन्हीं के समीप साइकस जैसे पौधे के जीवाश्म भी दिखते हैं। इन्हें देखकर इन जीवाश्मों का काल संभवतः 4-5 करोड़ वर्ष पूर्व (क्रेटेशियस काल) लगता है।

ये सारे जीवाश्म नदी के इतने समीप हैं कि वर्षा काल में इनके पुनः डूब जाने की संभावना है। अतः इनको संरक्षित किया जाना अत्यंत आवश्यक है। साथ ही इस स्थान पर गहन शोध की आवश्यकता है ताकि नर्मदा घाटी के गर्भ में छिपे कई पन्नों को अच्छी तरह से पढ़ा जा सके और इसके डायनासौर और उस समय के जीवन पर प्रकाश डाला जा सके। यदि समूचे जीवाश्म खोजे जा सकें तो कई नए तथ्य सामने आएंगे और उड़ने वाले डायनासौरों के बारे में और अच्छी तरह से समझा एवं जाना जा सकेगा। ***(स्रोत फीचर्स)***

स्रोत के ग्राहक बनें, बनाएं

वार्षिक सदस्यता

व्यक्तिगत 150 रुपए

सदस्यता शुल्क एकलव्य, भोपाल के नाम ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से

ई-10,शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल (म.प्र.) 462 016

के पते पर भेजें।